IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY *(IJARETY)*

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi cross ref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

राम काव्य में प्रेम के विविध पक्ष

INDRAJEET YADAV

ASSISTANT PROFESSOR, DEPT. OF HINDI, SHRI D.C. JAIN GOVT. COLLEGE, BEHROR, DISTRICT: KOTPUTLI-BEHROR, JAIPUR, RAJASTHAN, INDIA

सार

हर देश के निवासी या नागरिक का प्रथम कर्त्तव्य अपने देश की मिट्टी के लिए सबसे बड़ा कर्त्तव्य होता है। जैसा एक पुत्र का अपनी माँ के प्रति होता है। इसलिए यह स्वाभाविक है जैसे एक बालक अपनी माँ से प्रेम करता है उसी के आँचल में रहना चाहता है। किसी कारण दूर रहकर भी माँ की स्मृतियों को कभी नहीं भूलता। उसी तरह प्रत्येक देशवासी भी अपने देश के हर कण-कण से प्रेम करता है। प्रवास में जाकर भी व्यक्ति अपने देश की यादों को सदैव याद करता है, उसी में लौटना चाहता है। इसका कारण यह भी है कि वह जिस मातृभूमि में रहा, जो नाम उसके साथ देश का नाम मिला वही उसको सुखद लगता है। क्योंकि हर मानव को अपनी ही संस्कृति, लोक संस्कृति, रीति-रिवाज़ों, रहन-सहन और सभ्यता से प्रेम होता है।

परिचय

भारत एक विशाल देश है, जिसमें नदियों, पौधों, पशु-पक्षियों, ऋतुओं के आगमन का स्वागत बहुत धूमधाम से होता है। अनेक प्रकार की विभिन्नता होने पर भी भारत एक अखण्ड राज्य के रूप में जाना जाता है।

प्राचीन ग्रन्थों में भी राष्ट्रीयता की वंदना की गई है। ईश्वर की वंदना के साथ-साथ राष्ट्र की वंदना हमारी संस्कृति की विशेषता है। भारत में विभिन्न क्षेत्र, बोलियाँ, भाषा, रीति-रिवाज़ों के अलग-अलग होने पर भी संयुक्त कुटुम्ब की भावना सभी के हृदय में विद्यमान है। ऋग्वेद में ऐसी भावनाओं के दर्शन किए जा सकते हैं:

"सगच्छध्वं संवदध्वं संपो मानंसि जानताम।
देवा भागं यथा पूर्व सन्जानना उपासते॥"

हम सबकी गति एक प्रकार की हो, हम सभी एक साथ चलें, एक प्रकार की वाणी बोले, हम सभी के मन में एक ही भाव प्रकट हो। जैसे देवता पहले से करते आए हैं, उसी प्रकार का समान भाव करो। देशप्रेम की भावना के लिए मन में किसी प्रकार का भेदभाव हो तब भी देशप्रेम की भावना का चक्कर कमज़ोर पड़ जाता है।

भारतीय संस्कृति उदार मानवीय मूल्यों और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के आधार पर खड़ी है। इसलिए भारतीय राष्ट्रीय चिंतन में उदारता के साथ-ही-साथ अखिल सृष्टि के साथ सामंजस्य की भावना सर्वत्र दिखाई देती है। यही भावना उसकी विशालता का द्योतक है और उसे अंतरराष्ट्रीय कल्याण का पोषक बनाती है। राष्ट्रीय भावना देश के प्रत्येक नागरिक के मन और हृदय के तारों से जुड़ी रहती है। भारत की एकसूत्रता के विषय में 'संस्कृति के चार अध्याय' में दिनकर जी ने भारत की प्राचीन राष्ट्रीयता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है, "उत्तर को आर्यों का देश और दक्षिण को द्रविड़ों का देश समझने का भाव यहाँ कभी नहीं पनपा। क्योंकि आर्य और द्रविड़ नाम से दो जातियों का विभेद यहाँ हुआ ही नहीं था। समुन्दर के उत्तर और हिमालय से दक्षिण वाला विभाग यहाँ हमेशा एक देश माना जाता रहा है।" राष्ट्रीय भावना से भरे विचार और विचारधारा राष्ट्र के लिए एक रहती है। समय की माँग के अनुसार राष्ट्रप्रेम अपना साक्षात् रूप भी दिखा देता है। जब सीमा पर जवान शहीद होता है तो पूरा राष्ट्र उसकी शहादत देता है। तब शहीद पूरे देश का बेटा कहलाता है। डॉ. सुधीन्द्र ने राष्ट्र के सम्बन्ध में लिखा है, "भूमि, भूमिवासी जन और जन संस्कृति का समुच्चय 'राष्ट्र' है और 'राष्ट्र' के उत्थान और प्रगति के संयोजक तत्वों का समीकरण राष्ट्र धर्म है।"

डॉ. विनयमोहन शर्मा के अनुसार, "राष्ट्र जाति, धर्म एवं भाषा की एकता का नाम नहीं है, वह भावना की एकता का नाम है।"

इन्हीं सभी भावों, विश्वासों, मान्यताओं, राष्ट्र संगठन संबंधी नियमों, अवधारणाओं, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और पारिवारिक मूल्यों को इकट्ठा किये हुए रामकाव्य ऐसा भण्डार है जिसमें कूट-कूट कर राष्ट्रीयता की भावना से भरा है। रामकाव्य महाकाव्यों में वर्णित विषयवस्तु हर पग राष्ट्रीय और समाज के कर्त्तव्यों का निर्वाह करती है। आधार ग्रन्थ 'रामायण' से लेकर गोस्वामी तुलसी कृत 'रामचरितमानस' और अन्य भाषाओं के रामकाव्य का मौलिक गुण देशप्रेम और राष्ट्रीय भावना ही है। जिसमें राजधर्म के लिए, राजा अपनी प्रजा के हित के लिए, सभी कार्य करता है। आधुनिक हिन्दी रामकाव्यों में भी राष्ट्रीयता का पर्याप्त आख्यान मिलता है। उसमें भारत के हर तरह से समृद्ध एवं गौरवपूर्ण अतीत और वर्तमान के चित्रण उपस्थित किया गया है। निराला जी द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' में स्वतंत्रता प्राप्ति की छटपटाहट वास्तव में निराला ने 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' कहकर सीधा संकेत किया है कि जो अन्यायी अँग्रेज़ हैं, वे शक्तिशाली हैं। इन सभी प्रसंगों को जामवंत के मुख से समाधान के रूप में निराला की कविता में प्रस्तुत करते हैं:

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त
शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक सिद्धि न हो रघुनन्दन।"
(राम की शक्तिपूजा, निराला, राग-विराग, पृ. 100)

निराला उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से भारतवासियों को बताते हुए कहते हैं कि हमें अपने राष्ट्र के लिए, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए 'शक्ति की मौलिक कल्पना' करनी चाहिए। ये ही सुझाव निराला ने जनवासियों को दिया है। देशवासियों में माँ भारती के लिए प्राण देने की चाह है। राष्ट्र की उन्नति और विकास के लिए दृढ़ संकल्प लेते हैं। अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं। इन सभी गुणों को देश के नागरिकों में होना मौलिक गुण होता है जो राष्ट्रप्रेम की भावना को व्यक्त करता है।

छायावाद के स्तंभ जयशंकर प्रसाद ने अपनी कविता 'अयोध्या का उद्धार' में अपनी अस्मिता तथा स्वतंत्रता की रक्षा को ही कविता का मूल विषय बनाया है। जिसमें विदेशी शक जाति से अयोध्या को बचाने का संघर्ष, वास्तव में विदेशी व आक्रान्ताओं से जन्मभूमि 'भारत' को बचाने का सन्देश देती है। भारतभूमि शुरू से ही वीरों की भूमि रही है जो इस भूमि में आ जाता है वो यहीं का होकर रह जाता है। लेकिन माँ भारती जैसे प्रेम और स्नेह से दुलार करती है उसी तरह अपने बच्चों को किसी की गुलामी करते हुए और अत्याचार होते हुए भी नहीं देख सकती। भारतवासियों में राष्ट्रप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी है। तभी तो जहाँ भारत के लोग भारत में आये अतिथियों का सत्कार करते हैं लेकिन भारत में क़ब्ज़ा जमाने वालों को बाहर का रास्ता दिखाने के लिए अपने ख़ून की एक-एक बूँद बहा देते हैं। 'अयोध्या का उद्धार' बाहरी लोगों से रक्षा हेतु अयोध्या को बचाने का संघर्ष का वर्णन महाकवि जयशंकर प्रसाद ने इन पंक्तियों के माध्यम से कहा है:

"रघु दिलीप अज आदि नृप
दशरथ राम उदार
पाल्यो जाको सदय हवै
तासु करहु उद्धार।"

भारतभूमि शुरू से ही वीरों की भूमि रही है। भारत के हर कण-कण में राष्ट्रीय भावना और देशप्रेम का स्वर गूँजता है। 'संशय की एक रात' कवि नरेश मेहता कृत खण्डकाव्य है जिसमें राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखरित है जिसका केन्द्र बिन्दु राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की रक्षा है। 'राम' भारतीय गौरव है जो आम मानव यानी देश का आम नागरिक जो अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को बचाने के लिए युद्ध के लिए तैयार होता है। 'संशय की एक रात' खण्डकाव्य में नरेश मेहता का 'राम' राष्ट्रीय भावना से युक्त होकर ही युद्ध करने को तैयार होता है। 'संशय की एक रात' काव्य में चित्रित किया गया है कि जब 'राम' को भ्रम होता है कि 'सीता' की रक्षा व्यक्तिगत समस्या है, तब वानरादि राम को स्मरण कराते हैं कि 'सीता' स्वतंत्रता' का प्रतीक है, जो सभी भारतवासियों की स्वतंत्रता है। हनुमान कहते हैं:

"रावण अशोक वन की सीता
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता"

इन पंक्तियों के माध्यम से 'संशय की एक रात' में कवि नरेश मेहता ने 'राम' को युद्ध के लिए राष्ट्र के लिए तैयार किया है जो राष्ट्रभावना से भरा हुआ है, जिसके सामने राम की पीड़ा, उनके हृदय में दर्द देती है। 'सीता' रूपी स्वतंत्रता की प्राप्ति कर, राम वीर योद्धा को प्रस्तुत किया है। कवि नरेश मेहता का 'प्रवाद पर्व' खण्डकाव्य भी राष्ट्रीय चेतना पर ही आधारित है जिसमें व्यक्ति की 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' की रक्षा की गई है। इसमें सीता के मुख से कवि ने अभिव्यक्त किया कि भारतीय जनसाधारण का विश्वास तुम्हारे ऊपर है धीर, कि आप जैसा योद्धा भारत का हर वीर है, वीरों का गुण ये है कि वो अपनी मातृभूमि की रक्षा अपने प्राणों की आहुति देकर भी करेगा। राष्ट्र के निर्माण की ज़िम्मेदारी हर प्राणी की है लेकिन योद्धाओं को केन्द्रबिन्दु में रखा जाता है। वह हमारे देश के प्रहरी होते हैं। पूरा राष्ट्र आन्तरिक रूप से शान्ति व सुखी होता है जब देश की सीमा पर हमारे योद्धा रक्षा करते हैं। कवि नरेश मेहता कृत 'प्रवाद पर्व' में व्यक्ति की अभिव्यक्ति के रक्षार्थ सीता के द्वारा कहलवाये गये वाक्य उल्लेखनीय हैं। यदि यह उस अनाम साधारण जन का विश्वास है जिसने उसने निर्णय अभिव्यक्त किया है तो राज्य न्याय तथा आपको उस अनाम प्रजा के विश्वास की अभिव्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'वैदेही वनवास' सीता का भी राष्ट्र के प्रति देशप्रेम भावना प्रस्तुत की है। 'वैदेही वनवास' के राम तुलसी के अखिल लोक विश्राम राम से भिन्न लोक विश्राम राम हैं एवं लोक विश्राम का अर्थ है, परम शान्तिपूर्ण सुख। यह भी सम्भव हो सकता है कि जब राजा अपने हितों की अपेक्षा जनहित की ओर विशेष ध्यान दें। जनमत का आदर करना सीखें। यह परम्परा हिन्दू राजाओं की विशेषता थी। राजा सगर ने अपने पुत्र का परित्याग करके उसी आदर्श की स्थापना की थी। मन्त्रणा परिषद में सीता का त्याग करने के पश्चात राम वशिष्ठ आश्रम में जाते हैं और उनसे सब वृत्तांत निवेदन करके उनसे अपना निश्चय यों कहते हैं:

"त्याग करूँ बड़ा क्यों न मैं
अंगीकृत है लोकाराधन जब मुझे
हो प्रियतमा वियोग, प्रिया व्यथिता बने
तो भी जनहित देख अविचलित चित्त हूँ।"

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

इस पर गुरु वशिष्ठ राम को समझाते हुए कहते हैं:

"जो हो पर पथ आपका अतुलनीय
लोकाराधन ही उदारतम नीति है
आत्मयाग का बड़ा उच्च उपयोग है
प्रजा-पुंज की उसमें भरी प्रतीति है।"

मुनि वशिष्ठ सीता को कुलपति महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में भेजने का परामर्श देते हैं और साथ ही सभी बातें सीता से स्पष्ट कह देने का भी उपदेश देते हैं:

"किन्तु आपसे यह विशेष अनुरोध है
सब बातें कान्ता को बतला दीजिये
स्वयं कहेंगे वह पति प्राशा आपसे
लोकाराधन में विलंब मत कीजिये।"

क्योंकि उन्हें विश्वास था कि पतिपरायण, पतिव्रता सीता अपनी पति कीर्ति में कालिमा लगती हुई देखकर इस प्रस्ताव का स्वयं स्वागत करेगी।

राम सीता को सभी बातें बताते हैं और वे सहर्ष राजा राम की आज्ञा मानकर राष्ट्रधर्म का पालन करती हुई वनगमन के लिए तत्पर होती है। राम के दर्शन कर हमें कर्तव्यनिष्ठ होने की बलवती प्रेरणा मिलती है। यह तो नहीं कि राम में सहृदयता नहीं थी, उनका मन वियोग की पीड़ा से करुणार्द्र था, किन्तु रिपुसूदन के शब्दों में:

धीर धुर धर, नीतिज, न्यायरत, संयत तथा लोकाराधन में तत्पर रहे हैं। राम के चरित्र का पूर्ण परिचय हमें इस गीत में मिलता है:

"जय जय रघुकुल कमल दिवाकर
मर्यादा पुरुषोत्तम सदगुण रत्न-नियम रत्नाकर"

सच में राम आदर्श राजा थे जो राष्ट्रधर्म और पिता की आज्ञा पाकर चौदह वर्ष के वनवास में चले गये। रामकाव्य में पिता की आज्ञा, गुरु की आज्ञा, माता की सेवा, भाई-भाई प्रेम, मित्रता प्रेम के साथ समन्वयवादी भावना मिलती है। सीताजी भी राष्ट्रसेवा का धर्म निभाती हुई राजधर्म का पालन करती है। 'वैदेही वनवास' की 'सीता' भारतीय संस्कृति एवं 'राम' जो मर्यादा पुरुषोत्तम और आदर्श पति की धर्मपत्नी है जो स्त्रियों के लिए शिक्षा और प्रेरणास्रोत बनी है। पति-परायणता एवं पति-सुश्रूषा इनका मुख्य उद्देश्य है। इसलिए राम द्वारा निर्वासन सीता सहर्ष स्वीकार कर लेती है।

'बलदेव प्रसाद' कृत 'साकेत संत' में तपस्या, त्याग और नीति के त्रिमूर्ति राम अनुज 'भरत' परम्परागत रूप में ही आये हैं पर इनके चरित्र में थोड़ा परिवर्तन किया है। एकता, अखण्डता और विश्वबन्धुत्व, देशप्रेम के लिए सर्वस्व न्योछावर का सन्देश दिया है। जहाँ माता कैकेयी ने भरत के लिए राज्य की माँग की, भरत के मामा भरत को राज्य के प्रति झुकाने का प्रयास करते हैं। लेकिन भरत 'राम' से और अयोध्या को प्रजा से बहुत प्रेम करते थे। अयोध्या आकर भरत अपनी माँ से कुपित तथा मंथरा के स्वार्थ पर काफ़ी ग़ुस्सा करते हैं और माँ कैकेयी और मंथरा को अपशब्द भी कह जाते हैं कि अयोध्या के भावी राजा और मेरे बड़े भाई के लिए आपने ऐसा क्यों किया। भरत ग्लानि तथा पश्चात्ताप की अग्नि में जल रहे हैं। कवि कहते हैं:

"स्वार्थ की कितनी दुर्धर आग
जलाकर जगत रहा वह जाग
आय के मिथ्या भ्रम में हाथ
मनुज मनुजों को ही खा जाय।"

जब भरत अपने बड़े भाई 'राम' से मिलने चित्रकूट जाते हैं तब राम उन्हें मानवता और राष्ट्रप्रेम को सजल भाव से बताते हैं:

"वही शासित है बनकर व्यक्ति
वही शासक है बनकर राष्ट्र
उसी में है अन्तर, राष्ट्रीय
बन्धनों से छन-छन कर राष्ट्र
सभी रंगों में एक असंग
कहाँ गोरे-काले का भेद
वही शिव सुन्दर सत्य महान
उसी की महिमा में रत वेद।"

राम भरत को समझाते हैं कि वे संपूर्ण संसार को सुख वैभव संपन्न देखना चाहते हैं। राम भरत पर सभी मानवों का दायित्व सौंपते हैं। उनका विश्वास है कि हम राष्ट्रप्रेम के भावों से जो कार्य करते हैं वह सभी के हित के लिए होता है।

लक्ष्मीकान्त वर्मा कृत 'चित्रकूट चरित' में भी राष्ट्रप्रेम और देशप्रेम का सन्देश दिया है। 'शिववचन चौबे साकृत्यायन' कृत 'कैकेयी की रामभक्ति' में भी राम के दर्शन राष्ट्रप्रेमी के रूप में होते हैं। 'रघुवर दयाल श्रीवास्तव' कृत 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के राम अखण्डता और राष्ट्रभक्ति के पक्षधर हैं। वह अवध को विश्वमय देखते हैं और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जगत में जगाना चाहते हैं। ताकि देश में प्रेम भावना और देशभक्ति की भावना का विकास हो। पूरा राष्ट्र एकता के सूत्र में बँधकर विश्व बन्धुत्व से संपन्न हो।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

कवि रघुवर दयाल जी कहते हैं:
"सारा विश्व अवध बन जाये
सभी सुसंस्कृत हों, समाज हो
जननी मानें सभी अवध को और
हम एक राष्ट्र हों।
लेकर यह उद्देश्य जा रहा हूँ मैं वन में
नहीं चर्म उत्कर्ष व्यक्ति का सिंहासन में।"

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल के रामकाव्य जहाँ मर्यादा और आदर्शवादी भावना पैदा करते हैं वहाँ हर पग-पग पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भावना भी सीखते हैं। राम बचपन से ही ऋषि-मुनियों के आश्रमों में राजा की आज्ञा पाकर उनकी सेवा में लग जाता है। रामकाव्यों में राष्ट्रप्रेम भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण के रूप में भी स्पष्टता से चित्रित किया गया है। रामकाव्यों में राम का राजा का परिवार राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है जिसमें राजा दशरथ के चारों पुत्र और पुत्रवधू राष्ट्रधर्म का पालन करती है। राजा दशरथ के चारों पुत्र रामकाव्य में राष्ट्रप्रेम दिखाया है। वहीं इन चारों पुत्रों की पत्नियों को भारतीय संस्कृति के रूप में चित्रित किया गया है। इसलिए रामकाव्य में राष्ट्रप्रेम भावना के स्वर और भारतीय संस्कृति के संस्कारों से भरा हुआ है। भारत देश मूलतः संस्कृति प्रधान देश है जिसके कारण भारत की सांस्कृतिक, राष्ट्रवाद की संज्ञा दी गई है। हमारी उदारता, मानवता, संवेदनशीलता तथा सहिष्णुता का मूल कारण हमारी सांस्कृतिक विरासत रही है। आज के समय में तुलसीकृत 'रामचरितमानस' की रचना और आधुनिक रामकाव्यों में कवियों की भावना राष्ट्रीयता भावना का सन्देश जन-जन में देती है। जिससे समाज को एक अच्छा मार्गदर्शन प्राप्त हो। समूचे समाज और विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव पैदा हो। रामकाव्यों में राष्ट्रीय भावना को हमेशा ही कवियों, लेखकों, विद्वानों और जिज्ञासुओं ने इसलिए भी चित्रित किया है कि समाज में हर तरह के मूल्य का विकास हो जिससे समाज को एक ज्ञानवर्धक और उज्ज्वलमय दिशा-दशा मिल सके। जिससे समूचे विश्व का कल्याण हो।

विचार-विमर्श

हिन्दी साहित्य में राम भक्ति काव्य धारा ने सागुण भक्ति और भक्ति आंदोलन की मूल संवेदना को लोक-भाव-भूमि पर द्रढ़ता से प्रतिष्ठित किया है । दक्षिण भारत में भक्ति-आंदोलन और उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन दोनों की चेतना को तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में देखना होगा।

सगुण काव्यधारा के अंतर्गत भगवान विष्णु के दो अवतारों कृष्ण और राम को आराध्य मानकर कवियों ने साहित्य सृजन किया। स्वामी वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग के संरक्षण में कृष्ण भक्ति शाखा पल्लवित-पोषित हुई तो स्वामी रामानंद ने संपूर्ण उत्तरी भारत में रामभक्ति लहर का प्रवर्तन किया। रामानंद के प्रयासों से ही हिंदी के भक्तिकालीन साहित्य में रामभक्ति साहित्य का विकास हुआ।

इस में हम चिन्तन-परम्परा के परिप्रेक्य में यह भी समझेंगे कि इसमें रामानंद की क्या भूमिका रही है और उन्हें रामकाव्य परम्परा के चिंतन का मेरुदण्ड क्यों कहा जाता है? रामानन्द का रूढ़धिवाद-पूरोहितवाद विरोधी चिन्तन ही कबीर और तुलसीदास में रचनात्मक निष्पति पाता है।

रामानन्द ने शास्त्र परम्परा और संस्कृत भाषा के स्थान पर लोक-जागरण, लोक-कल्याण के लिए लोकभाषा में काव्य-सृजन की भूमिका तैयार की इसी भूमिका पर कबीर और तुलसी की भक्ति- चेतना, लोक-संवेदना का निर्माण विस्तार हुआ। वाल्मीकि रामायण की परम्परा ने समय के साथ परिवर्तनों को स्वीकार किया, उसी का नया सृजन-चिंतन राम-भक्ति काव्य में देखने को मिलता है।

श्री संप्रदाय के प्रवर्तक रामानुजाचार्य के शिष्य राघवानंद ने उनके विचारों के प्रचार उत्तरभारत में किया था। राघवानंद ने उनके सिद्धांतों का कुछ संशोधन भी किया था जैसे की वैष्णव भक्ति के दौरान जाती पाती के भेद को निषेध करना लक्ष्मी-नारायण के उपासना के रूप मैं राम सीता का भी उपासना करना भक्ति को योग के साथ समन्वित करना आदि महत्वपूर्ण है।

राघवानंद के शिष्य श्री रामानंद थे जिन्होंने लगभग 14बीं सदी के आसपास श्री संप्रदाय का प्रचार रामभक्ति के रूप मैं किया जिन्होंने वर्णों तथा वर्गों के लोगों को भी भक्ति के अधिकारी के रूप मैं बताया। इसके पश्चात निम्न वर्गों के लोगों के साथ खान पान पर निषेध का विरोध भी किया, जिससे ये भक्ति धारा एक नए मोड़ पर चलने लगा।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

उन्होंने ने ब्रह्म के उभय निर्गुण तथा सगुण रूपों को भक्ति करने का उपदेश दिया। उनके अनुसार

सगुण ब्रह्म को ज्ञान और वैराग्य मुक्त प्रेमयोग तथा
निर्गुण ब्रह्म को प्रेम और वैराग्य मुक्त ज्ञानयोग
से प्राप्त किया जा सकता है। यही एक विशेष कारण था जिसके लिए रामानंद उभय निर्गुण संत तथा सगुण भक्तों को अपने शिष्य तथा अनुगाई के रूप मैं प्राप्त कर सके।

रामकाव्य परंपरा का प्रारंभ

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में निर्गुण और सगुण दो काव्यधाराएँ विकसित हुई। सगुण काव्यधारा के अंतर्गत भगवान विष्णु के दो अवतारों कृष्ण और राम को आराध्य मानकर कवियों ने साहित्य सृजन किया।

स्वामी वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग के संरक्षण में कृष्ण भक्ति शाखा पल्लवित-पोषित हुई तो स्वामी रामानंद ने संपूर्ण उत्तरी भारत में रामभक्ति लहर का प्रवर्तन किया। रामानंद के प्रयासों से ही हिंदी के भक्तिकालीन साहित्य में रामभक्ति साहित्य का विकास हुआ।

वाल्मीकि ने देवताओं पर काव्य रचने की परंपरा को अस्वीकार करते हुए मानव की महिमा को प्रतिष्ठित करने के लिए नर-काव्य 'आदिकाव्य' का सृजन किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'भारतवर्ष में इतिहास धारा' नामक निबंध में कहा है कि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम नरकाव्य परंपरा का प्रवर्तन किया।

रामकाव्य परंपरा को सम्पूर्ण रूप से भगवान राम जो की रामायण के नायक थे तथा उनके सगुण रूप के साथ विद्यमान कराया जाता है। राम जो भारतीय संस्कृति के भाव नायक है, पुरानपुरुष है, मिथक नायक है भावनायक है तथा लोकनायक भी है।

वैदिक काल के बाद संभवत: छठी शताब्दी में इक्ष्वाकुवंश के सूत्रों द्वारा रामकथा-विषयक गाथाओं की सृष्टि होने लगी। फलत: चौथी शताब्दी तक राम का चरित्र स्फुट आख्यान-काव्यों में रचा जाने लगा। इसलिए रामकथा के विद्वानों की एक बड़ी संख्या यह मानती है कि आदिकवि वाल्मीकि से कई शताब्दी पूर्व राम-कथा को लेकर आख्यान-काव्य-परम्परा मिलती है।

किन्तु यह वाचिक परम्परा थी अत: इसका साहित्य आज अप्राप्य है। ऐसी स्थिति के कारण वाल्मीकिकृत रामायण प्राचीनतम उपलब्ध रामकाव्य है।

वाल्मीकि ने देवताओं पर काव्य रचने की परंपरा को अस्वीकार करते हुए मानव की महिमा को प्रतिष्ठित करने के लिए नर-काव्य 'आदिकाव्य' का सृजन किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'भारतवरषर्ष में इतिहास धारा' नामक निबंध में कहा है कि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम नरकाव्य परंपरा का प्रवर्तन किया।

राम कौन थे, सीता कौन थी, इनका जन्म विवाह कब कहाँ हुआ, रावण कौन था, रावण के बाद राम-सीता का जीवन कैसा रहा, लोक में उठे इन तमाम प्रश्नों जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए 'आदिकाव्य' में बालकांड तथा उत्तरकांड को प्रक्षिप्त रूप में जोड़ दिया गया।

इस प्रकार राम-कथा राम का अयन अर्थात राम का भ्रमण न रहकर सम्पूर्ण राम चरित के रूप में विकसित हुई। तुलसीदास का यह कहना मास आदि कवि पुंगव नाना। जिन भाषा हरि चरित बखाना' तथा 'राम कथा की मिति जग नाहीं' इसी सत्य की ओर संकेत करता है।

रामभक्ति विकास के सम्यक अध्ययन से राम के रूप के विकास की तीन अवस्थाएं स्पष्ट परिलक्षित होती है- ऐतिहासिक, साहित्यिक और सांप्रदायिक। राम का ऐतिहासिक रूप लगभग पाँच शताब्दी ईसा पूर्व वाल्मीकि रामायण में अक्षुण्ण है। उनका साहित्यिक रूप एक शताब्दी ईसा पूर्व भाग से लेकर कालिदास आदि संस्कृत कवियों द्वारा रचा गया है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

रामानुजाचार्य की शिष्य परंपरा में राम भक्ति के सांप्रदायिक विकास को देखा जा सकता है। रामानुजाचार्य के शिष्य स्वामी रामानंद ने 'श्री संप्रदाय' की स्थापना की तथा समस्त जनमानस के लिए रामभक्ति के कपाट खोल दिए।

रामानंद और उनके शिष्यों द्वारा प्रचारित राम कथा के वातावरण में गोस्वामी तुलसीदास का महान रामकाव्य सामने आया। रामभक्ति के विकास में तुलसीदास का सर्वाधिक योगदान है। इनके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' हिंदी साहित्य का गौरव ग्रंथ है।

रामभक्ति काव्य और रामानन्द

रामानंद को राम भक्ति काव्य परम्परा के चिंतन का मेरुदण्ड कहा जा सकता है। उन्होंने ही सर्वप्रथम लोक भाषा में रचना कर्म करने की प्रेरणा दी। रामानंद की दो भुजाएँ – निर्गुण धारा में कबीर और सगुणधारा में तुलसीदास दोनों ही रामानंद के मानस-शिष्य हैं और दोनों ही दो परम्पराओं के प्रवर्तक और अपने-अपने ढंग के लोकमंगलवादी हैं।

रामानंद सम्प्रदाय की स्थापना आज से छह सौ वर्ष पूर्व हुई थी। इस सम्प्रदाय या मत के प्रवर्तक स्वामी रामानंद का पूर्व-सम्बंध रामानुजाचार्य (11वीं शताब्दी) के सम्प्रदाय से रहा। इस बात की पुष्टि नाभादासकृत 'भक्तमाल' से भी होती है।

हिन्दी में सगुण रामकाव्य परंपरा और आँय कवि

राम भक्ति काव्य या रामभक्ति शाखा में रामकाव्य के महत्वपूर्ण कवि तुलसीदास के अतिरिक्त भी कुछ कवि हैं। इन कवियों ने तुलसीदास की तरह सार्वदशिक और सार्वकालिक रचना तो नहीं की परंतु उनका महत्व भी रामभक्ति शाखा के इतिहास में है।

उन रामभक्त कवियों में रामानंद का नाम आता है। रामानंद ने भक्ति को शास्त्रीय मर्यादा के बंधन से मुक्त माना। जाति और वर्ण के भेदभाव से ऊपर उठकर भक्ति को जनसामान्य से जोड़ने का प्रयत्न किया।

इसलिए रामानंद की शिष्य परंपरा का संबंध रामभक्ति शाखा के तपसी और उदासी सम्प्रदाय से जोड़ा जाता है, वहीं निर्गुण भक्ति के ज्ञानमार्गी परंपरा से भी उनका संबंध संकेतित किया जाता है। रामानंद के कुछ पद हनुमान जी की स्तुति के रूप में प्रचलित हैं।

"आरति कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की। '"

दूसरे रामभक्त कवियों में अग्रदास का नाम प्रमुख है। अग्रदास ने रामभक्ति को कृष्ण भक्ति के लोकानुरंजन के समीप लाने का प्रयत्न किया। उनके काव्य में अष्टयाम अथवा रामाष्टयाम को मुख्य माना जाता है।

राम के ऐश्वर्य रूप की झकी इन लीलाओं में स्पष्ट दिखाई देती है। इन्होंने सखी सम्प्रदाय के लिए रास्ता साफ कर दिया। ईश्वर दास भी रामभक्त कवि थे। राम कथा से संबद्ध उनकी रचनाओं में 'भरत मिलाप' और अंगद पैज' प्रमुख हैं। भरत मिलाप में उन्होंने करूण प्रसंग को तन्मन्यता से रचा है।

नाभादास तुलसीदास के समकालीन रामभक्त कवि थे। नाभादास अग्रदास के शिष्य थे। भक्तमाल की रचना नाभादास ने की थी । भक्त माल हिंदी साहित्य के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें मध्मकाल के भक्त कवियों पर टिप्पणी की गई है। इस ग्रंथ से तत्कालीन समाज की मानसिकता का पता चलता है।

भक्त कवियों का जनता पर क्या प्रभाव था इसकी भी सूचना हमें मिलती है। अन्य राम भक्त कवियों में प्राणचंद चौहान का और हृदयराम का उल्लेख किया जाता है। प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक और हृदयराम ने भाषा हनुमान नाटक लिखा।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

रामकाव्य परम्परा में लोक जीवन और लोक संघर्ष

राम भक्ति काव्य में लोक-धर्म', 'लोक चिन्ता', लोक मानस', लोकरक्षा' तथा लोक मंगल' की भावना का प्राधान्य है। प्रमुख राम भक्त कवि तुलसी ने लोक संघर्ष अर्थात साधारण जनता के जीवन संघर्ष्ष का चित्रण बोहोत ही सुंदरता के साथ किया है। तुलसी काव्य के नैतिक मूल्यों का संघर्ष साधारण जन संघर्ष से जुड़ा संघर्ष है।

स्वयं तुलसी ने भूख-गरीबी, अकाल, काम, क्रोध से संघर्ष किया है और इस आत्म संघर्ष के चित्र कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका में विशेष रूप से पाए जाते हैं। तुलसी काम से लड़ते हैं तो उसे नष्ट् करने के लिए, उसे 'मर्यादित' करने के लिए लड़ते हैं।

नारद मोह प्रसंग' में नारद की खिल्ली उड़ाते हैं तो शूर्पणला की काम-उट्ण्डता पर दण्ड देते हैं और रावण को काम' मर्यादा अस्वीकार करने के कारण ही मरण-दण्ड ये दर्शाते है। तुलसीदास वैराग्य का उपदेश नहीं देते पर लोक मर्यादा के पालन का संदेश देते हैं। तुलसी ने लोक को संघर्ष करने का उपदेश दिया है। यह संसार झूठा मिथ्या नहीं है सत्य है, इसमें कर्म सौदर्य ही सत्य है। झूठो है झूठो है' कहने वालों पर तुलसी ने व्यंग्य किया है और इस संसार को सीय राम मय सब जग जानी' अर्थात सीता-राम का यथार्थ रूप माना है। नीच कर्म में पड़े ब्राह्मण-पुरोहित, जातिवाद में पागल व्यक्ति की वे निंदा करते हैं। 'राम राज्य' की आदर्श-कल्पना में प्रजा के सूखी सम्पन्न जीवन का स्वप्न है।

तुलसी के समय 'कालि बारहि बार अकाल परै', खेती न किसान को भिखारी को भीख बलि, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी' की चर्चा है – दारिद-दसानन' ने दरिद्रता रूपी रावण ने जनता को बेहाल कर दिया है। गरीबी – भुखमरी-दरिद्रता का जितना वर्णन अकेले तुलसी ने अपनी रचनाओं में किया है उतना मध्ययुग के किसी अन्य कवि ने नहीं।

रामकाव्य परम्परा में नारी :-

राम भक्ति काव्य में नारी को लेकर जो बातें कही गई, दुर्भाग्यवश उनका गलत प्रचार किया गया है । तुलसी की तो नारी कविरोधी छवि ही बना डाली है। जबकि राम भक्तिथारा नैतिक्तावादी-मर्यादावादी मूल्यों पर ही टिकी विचारधारा है और तुलसी के ग्रंथ लोक-जीवन में आचार-शास्त्र का काम करते रहे हैं ।

यह भी कहा जाता है कि तुलसी ने मीराबाई को पत्र-लिखकर जीवन का रास्ता दिखाया था –

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्यपि परम सनेही।

ऐसे तुलसीदास को नारी-विरोधी कहने का क्या अर्थ हो सकता है? इस बात पर आज गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। तुलसी के 'रामचरित मानस' कवितावली' को बिना पढ़े, बिना सही संदर्भ में समझने प्राय: तुलसी की निंदा की जाती है।

"वन्दौ कौसल्या दिशि प्राची"

कह कर राम की माता की वन्दना करते हैं – सीता को जगत-जननी कहते हैं और शिव के साथ पार्वती का आदर करते हैं।

रामचरित मानस' के कथा-प्रसंगों में कई बार 'सुनहु सती तब नारि सभाऊ' की चर्चा विशेष सन्दर्भ में आती है – पार्वती शिव से छल करती हैं तब शिव नारी स्वभाव में छल की बात उठाते हैं।

राम के सामने शबरी विनय-वश कहती है – 'अधम ते अधम अधम अति नारी' यहाँ नारी को अधम सिद्ध करना कवि का उद्देश्य नहीं है। भरत जैसा महान चरित्र एक बार क्रोध में नारियों को सकल कपट अघ अवगुन खानी कह देता है पर यह सामान्य-भाव धारणा नहीं है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

रावण को नीच-वचनों में एक नारि स्वभाव के 'आठ अवगुन' आते हैं पर सोचने की बात है कि तुलसी के मन में रावण के प्रति कौन सा भाव है तुलसीदास नारी के माता रूप पर प्रहार नहीं करते। कभी कभार नारी के कामिनी-कामान्ध रूप पर प्रहार करते हैं ।

नारि निबिड़ रजनी अंधियारी'

कभी कभार जिमि स्वतंत्र होई बिगरहि नारी' या ढोल गँवार शुद्र पशु नारी' जैसे वचन आते हैं। तुलसी सतीनारी और कुलटा नारी में लोकमन के हिसाब से भेद् करते हैं। राम और रावण में भी भेद करते हैं। नारी के प्रति तुलसी में अपार आदर न होता तो राम-कथा में राम, सीता के लिए मारे-मारे न फिरते । रावण द्वारा हरण करने पर सीता के लिए मछली की तरह न तड़पते।

थकानभरी सीता को देखकर पिय की अँखिया' आँसू न टपकातीं। राम के अवध् लौटने पर नारियां ही आगे हैं – नारि-समुद्र उमड़ पड़ा है। कैकेपी से राम क्षमा न माँगते – प्रथम तासु घर गए भवानी' । इस प्रकार राम-कथा में नारी की महिमा है यही महिमा गान मैथिलीशरण के साकेत' और निराला की 'राम की शक्तिपूजा' और तुलसीदास' काव्य की शक्ति बना है।

राम काव्य में समन्वय की भावना

हिन्दी में राम भक्ति काव्य धारा अपनी उदार समन्वय साधना के कारण बड़े आदर से याद की जाती है। इस समन्वय साधना का सर्वोत्तम रूप तुलसीदास के रचना-कर्म में प्रतिफलिंत हुआ है। आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि लोक-नायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके।

राम भक्ति काव्य में ध्यान में रखने की बात है कि विरुद्धों में सामन्जस्य स्थापित करना सरल कार्य नहीं है, उसके लिए अक्ल और धीरज चाहिए। यह अक्ल और धीरज, समन्वय के साधक तुलसीदास में है – 'उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है, लोक-शास्त्र का समन्वय, गाहस्थ्य और वैराग्य का सभन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, ब्राह्मण और चाण्डाल का समन्वय, निर्गुण और सगूण का समन्वय, कथा तत्वज्ञान का समन्वय, पाण्डित्य और अपाण्डित्य का समन्वय – 'रामचरित मानस' शुरू से आखिर तक समन्वय का काव्य है।

'हिन्दी में आगम-निगम परम्परा का इतना बड़ा जानकार और समन्वयकार कोई दूसरा नहीं। विद्वानों ने ठीक कहा है कि गौतम बुद्ध के बाद तुलसीदास ही भारत में सबसे बड़े लोक नायक हुए। इस कवि ने अपने समय में प्रचलित देवी-देव्ताओं, दार्शीनिक विचारधाराओं, अवधी, ब्रजी की भाषा परम्पराओं का समन्वय किया।

शैव-शाक्त चिन्तन परम्परा से वैष्णव-चिन्तन परम्परा का पुराना झगड़ा चला आ रहा था। इस कलह का शमन जरूरी था। मानस' में राम सीता को आदर दिया गया है। राम कहते हैं – शिव-द्रोही मेरा दास मुझे एकदम नापसन्द है। शिव द्रोही मम दास कहाना। जोजन मोहि सपनेहूं नहिं माना'।

मध्ययूगीन भारतीय विचारधारा में अनेक मत-मतान्तर थे और उनका परस्पर विरोध कभी भी प्रबल हो जाता था। विद्रोह के मूल में सामाजिक -धार्मिक विषमता थी। धर्म, जाति, द्रशन और उपासना के रगड़े-झगड़े थे। कर्मकाण्डी पुरोहितरवर्ग भक्तिवादियों से झगड़ रहा था। आर्य और आर्पेतर विचारधाराएँ टकरा रही थीं तुलसी जब गोरख जगाओ जोग भगति भगाओ लोक' कहते हैं तो यों ही नहीं कहते।

उसके पीछे भक्ति आंदोलन का पूरा अनुभव बोलता है। सिद्धों-नाथों-कापालिकों – तान्त्रिकों के चमत्कारवाद, गुह्य – साधना, कृच्छ-साधना से भक्ति मार्ग के साधकों को टकराकर नया मार्ग निकालना पड़ा। वाममार्गी मद्य, भांस, मत्स्य, मुद्रा और मैधुन – इन पाँच मकारों की उपासना करते थे, तुलसी ने इस शाक्त-मत का विरोध किया – तजि म्रुतिपंथ वामपंथ चलहीं' ।

राम भक्ति काव्य मैं रामानंद ने वैष्णव भक्ति के द्वार निचली जातियों के लिए खोलकर बहुत बड़ा सामाजिक उपकार किया। कबीर और तुलसी , निर्गुण और सगुण दोनों को मिला देने का नतीजा सुखदायक सिद्ध हुआ। भक्ति काव्य की एक मूल विचार ध्वनि है – प्रेम (पिमो पुमर्थो महान), प्रेम ही मानव-जीवन का अमुत है । इसी मंत्र से तुलसी ने सियाराम मय सब जग जानी' का प्रतिपादन किया ।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

रामकाव्य में तुलसीदास जी का अवदान

राम भारतीय-संस्कृति के भाव-नायक हैं। इस भाव-नायक की कथा में हर युग कुछ न कुछ जोड़ता चला आया है। राम ऐतिहासिक पुरुष नहीं है- पुराण पुरुष हैं, मिथक नायक है- भावनायक और लोकनायक। देश और काल के परिवर्तन चक्रों में पड़े राम को लोकनायक बनने में हजारों वर्ष लग गए। वैदिक काल के बाद संभवतः छठी शताब्दी ई. पू. में इक्ष्वाकुवंश के सूत्रों द्वारा रामकथा-विषयक गाथाओं की सृष्टि होने लगी।

राम भक्ति काव्य मैं रामकथा के विद्वानों की एक बड़ी संख्या यह मानती है कि आदिकवि वाल्मीकि से कई शताब्दी पूर्व राम कथा को लेकर आख्यान काव्य परंपरा मिलती है। किन्तु वह वाचिक परंपरा थी अतः इसका साहित्य आज अप्राप्य है।

ऐसी स्थिति के कारण वाल्मीकि कृत रामायण प्रचीनतम उपलब्ध रामकाव्य है। भारतीय परंपरा वाल्मीकि को 'आदिकवि' और रामायण को 'आदिकाव्य' मानती है। यह भी इस बात का प्रमाण है कि काव्य रूप में रामायण को ही सर्वप्रथम लोकप्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

बौद्धों ने कई शताब्दियों पूर्व राम को 'बोधिसत्त्व' मानकर रामकाव्य को जातक साहित्य में स्थान दिया है। बौद्धों की भांति जैनियों ने भी राम कथा को अपनाया। जैन कवि विमलसूरी ने 'पउमचरिय' प्राकृत भाषा में लिखकर रामकथा को जैन धर्म के साँचे में ढाल दिया। संस्कृत के सृजनात्मक साहित्य में रामकथा को लेकर महाकाव्य एवं नाटकों की एक विशाल परंपरा मिलती है।

कालिदास ने रघुवंश में पूरी रघुवंश की परंपरा का उल्लेख किया। इस परंपरा का श्रेष्ठ रूप भवभूति के 'महावीरचरित्र' तथा 'उत्तररामचरित्र' में मिलता है। भवभूति ने राम तथा अयोध्या की जनता के सामने सीता- चरित्र संबंधी करुण कथा के अभिनय की योजना की एवं यह सिद्ध किया कि मानव मन को स्पश्श करने में करुण रस जैसा दूसरा कोई रस नहीं है।

भारतीय भाषाओं में राम काव्य की परंपरा बहुत विशाल हैं। दक्षिण की भाषाओं में प्राचीनतम प्राप्त रामकथा कम्बन कृत तमिल रामायण है। उत्तरी भारत में तुलसी रचित 'रामचरितमानस तथा 'कृतिवासीय रामायण दोनों बहुत लोकप्रिय हैं।

रामानंद को रामभक्त परंपरा के चिंतन का मेरूदण्ड कहा जा सकता है। उन्होंने ही सर्वप्रथम लोक भाषा में रचना कर्म करने की प्रेरणा दी। रामानंद जी राघवानंद के शिष्य एवं रामानुजाचार्य की परंपरा के आचार्य थे। रामानंद की दो भुजाएँ – निर्गुण धारा में कबीर और सगुणधारा में तुलसीदास दोनों ही रामानंद के मानस शिष्य हैं। रामानंद के अराध्य हैं- श्रीराम । वे शील शक्त एवं सौन्दर्य के केन्द्र है। रामानंद का यही प्रतिमान तुलसी ने 'मानस में अपनाया है।

रामानंद संप्रदाय का मानना है कि संसार में एकमात्र कत्ता पालक एवं संहर्ता राम ही हैं- जीव उनका ही अंश है। सीता, राम की अनादि सहचरी आद्याशक्ति है। सीता राम की एकाग्र भाव से भक्ति ही भव-मोक्ष का साधन है। इस संप्रदाय की मुख्य भक्ति दास भाव की है।

भक्ति के अधिकारी ब्राह्मण, शुद्र सभी हैं। यहाँ कर्मकांड एवं वर्ण-व्यवरस्था को व्यर्थ बताया गया है। उन्होंने भक्ति को सभी प्रकार की संकीर्णवादिता से दूर करके इतना व्यापक बनाया कि उसमें गरीब-अमीर, स्त्री – पुरुष, निर्गुण-सगुण, सवर्ण-अवर्ण, हिन्दू - मुसलमान, सभी आ सकें।

कबीर, तुलसी, मैथिलीशरण पर रामानंदी विचारधारा का गहरा प्रभाव है। तुलसीदास हिन्दी रामभक्ति शाखा के सिरमौर हैं। तुलसी से पूर्व और पश्चात हिन्दी के अनेक कवियों ने राम-कथा को आधार बनाकर काय रचना की। यहँ राम भक्त कवियों और उनकी रचनाओं संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

तुलसी परवर्ती राम काव्य परम्परा

तुलसीदास ने राम भक्ति काव्य को इतना उत्कर्ष प्रदान किया कि आगे के कवियों के लिए नवीन सर्जनात्मक सम्भावनाएँ लगभग समाप्त हो गई। यह भी सच है कि तुलसी के पश्चात राम-भक्त कवि अधिक नहीं हुए। अग्रदास ने 'कुण्डलिया रामायण' और

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

'ध्यानमंजरी' में राम-कथा का वर्णन किया है। प्राणचन्द चौहान ने 'रामायण-महानाटक' तथा हृदयराम ने 'हनुमन्नाटक' का सृजन किया।

लालदास ने 'अवध-विलास' लिखी। रामभक्त कवियों की संख्या बहुत कम है। वैयक्तिक अनुभूतियों के स्वच्छन्द विलास के लिए कृपाण का चरित्र-अधिक उपयुक्त था। रीतिकाल के अधिकांश कवियों ने कृष्ण राधा को 'श्रृंगार को सार किसोर-किसोरी' कहकर अपनी कविता का विषय बनाया है।

तुलसीदास तथा परवर्ती भक्त कवियों के पश्चात रामकाव्य का सृजन करने वाले कवियों में केशवदास का नाम उल्लेखनीय है। विद्वानों का मत है कि केशव ने बाल्मीकि रामायण और तुलसी के 'रामचरित मानस' से प्रेरणा ग्रहण करते हुए 'रामचन्द्रिका' की रचना की। केशव विद्वान और आचार्य तो थे – पर उन्हें कवि-हृदय नहीं मिला था।

परिणाम

राम भक्ति काव्य प्रबन्ध काव्य के लिए कथा के मर्मस्पर्शी स्थलों की उन्हें पहचान नहीं थी। केशव ने राम को मर्यादा-पुरुषोत्तम के रूप में नहीं, एक रीतिकालीन वैभवसम्पन्न सामन्त के रूप में प्रस्तुत किया। अलंकार और द्वन्द्वकला के प्रदर्शनकारी चमत्कारवाद के कारण 'रामचन्द्रिका' आभाहीन होती गई। फिर केशव का समय तो भक्तिकाल है, पर प्रवृत्तियाँ रीतिकालीन हैं। पंडिगई उनके लिए बोझ है जिसके नीचे उनका कवि दबकर रह गया है।

रीतिकाल में राधा-कृष्ण के सुमिरन के बहाने श्रृंगार को अतिशय महत्व मिला। राम का लोकसंग्रही रूप रीतिकालीन कवियों की मनोवृत्ति के अनुकूल नहीं पड़ सका। यही कारण है कि इस काल में बहुत कम रचनाएँ राम को लेकर लिखी गई हैं।

रीवां नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह ने रामस्वयंवर' तथा 'आनन्दरघुनन्दन नाटक', महन्त रामचरण दास ने 'कवितावली रामायण' आदि राम कथा की रचनाएँ की हैं। विशेष ध्यान देने की बात यह है कि रामचरण दास ने राम-सीता के श्रृंगार का वर्णन करके राम भक्ति में माधुर्य भाव को स्थान दिया। आधुनिक काल में नवजागरण की चेतना से प्रेरणा पाकर अनेक रचनाकार रामकाव्य के सृजन कर्म में प्रवृत्त हुए हैं।

इनमें भारतेन्दु, रामचरित उपाध्याय, रामनाथ ज्योतिषी अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', आ. बलदेवप्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक साहित्य की रामकाव्य-परम्परा में सर्वाधिक महत्व मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य 'साकेत' और खण्डकाव्य 'पंचवटी' को मिला है। साकेत पर वैष्णव चिन्तन और गाँधी-विचार दर्शन की गहरी छाप है। 'साकेत' का कथा विधान नए युग की विचारधाराओं से आन्दोलित है। तुलसी के 'मानस' के बाद रामकाव्य परम्परा में 'साकेत' और 'पंचवटी' का अविस्मरणीय स्थान है।

छायावाद के और आधुनिक हिन्दी कविता के सबसे क्रान्तिकारी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के प्रिय कवि तुलसीदास रहे हैं। निराला जी ने जीवन भर काव्य सृजन किया। सर्वाधित प्रतिभा का विस्फोट उनकी दो रचनाओं में हुआ – 'राम की शक्तिपूजा' और 'तुलसीदास' हिन्दी प्रदेश का नवजागरण निराला जी की जातीय प्रतिभा में नया अर्थ-सन्दर्भ पाता है और इस अर्थ सन्दर्भ को सामने लाने का माध्यम है – रामकथा।

इस परम्परा में आगे चलकर सुमित्रानन्दन पंत, नरेश मेहता और जगदीश गुप्त के नाम भी उल्लेखनीय हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि राम भक्ति काव्य परम्परा आज भी हिन्दी कविता में नए रूपों और रंगों को लेकर निरन्तरता और परिवर्तन के साथ दिखाई देती है।

तुलसीदास के अतिरिक्त अग्रदास, प्राणचंद चौहान, हृदय शर्मा, माधवदास, मलूकदास, लालदास तथा नाभादास, केशवदास आदि कवि रामकाव्य धारा के अन्य महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इन कवियों की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है-

1. अग्रदासः अष्टायाम
2. प्राणचंद चौहानः रामायण महानाटक

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

3. हृदयशर्माः हनुमाननाटक
4. माधवदासः गुणरामरासो
5. मलूकदासः रामावतार लीला
6. लालदासः अवधविलास
7. नाभादासः भक्तमाल
8. केशवदासः रामचंद्रिका

रामभक्ति काव्य धारा की सामान्य विशेषताएं

सगुण राम भक्ति काव्य में सामजिक मर्यादा के साथ लोक-चिंता, लोक मानस लोकरक्षा तथा लोकमंगल की भावना का प्राधान्य है। इस काव्यधारा के कवियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अपना आराध्य माना है। राम ही उनकी कविता के विषय है।

नाना काव्यरूपों में उन्होंने राम का ही गुणगान किया है किन्तु उनके राम परमब्रह्म होते हुए भी मनुज हैं और अपने देशकाल के आदर्शों से निर्मित हैं। वे अपार मानवीय करुणा वाले हैं, गरीब निवाज हैं, तथा दरिद्रता रूपी रावण का नाश करने वाले हैं।

रामचरितमानस में तुलसीदास ने जिस आदर्श व्यवस्था के रूप में रामराज्य का स्वप्न बुनते हैं उसमें जाति, वर्ण, धर्म, संप्रदाय, अमीर- गरीब, अपनी पृथक सत्ता खो देते हैं।

राम भक्ति काव्य परंपरा ने लोक और शास्तर दोनों के सामंजस्य से अपना पथ प्रशस्त किया। ऊपर से उनकी रचना स्वांतः सुखाय, आत्म निवेदनात्मक, आत्मप्रबोध के लिए दिखाई देती हैं, लेकिन गहराई में हम पाते हैं कि लोक धर्म एवं लोकमंगल ही इस रचना कर्म की प्रेरणा भूमि है।

ये सभी भक्त कवि भक्ति को लोक कल्याण के के परिष्कार का माध्यम मानते हैं। भारत के राममय होने का कारण भी यही है कि संत कवि तुलसीदास ने परंपरा के अमृत तत्त्वों को उसमें भर दिया है।

राम भक्ति काव्य शाखा के कवियों ने अपने काव्य के लिए प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों शैलियों को अपनाया किन्तु इनका रूझान प्रबन्ध की ओर अधिक था। गेयपद और दोहा- चौपाई में निबद्ध कड़वक बद्धता उसके प्रधान रचना रूप है।

इन कवियों ने अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में काव्य का सृजन किया। छप्पय, सवैया, कवित्त, भुजंगप्रयात, बरवै आदि रामकाव्य के बहुप्रयुक्त छंद हैं। तुलसीदास ऐसे भक्त कवि हैं, जिनके यहाँ मध्यकाल में प्रचलित प्रायः सभी काव्यरूप मिल जाते हैं। वास्तविकता यह है कि रामकथा समस्त भारतीय सौन्दर्य का प्रतिमान है।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य के राम-भक्ति काव्य का दार्शनिक आधार विशिष्टाद्वैत है। हिन्दी क्षेत्र में विशिष्टाद्वैत रामानन्द के मत के रूप में प्रसारित हुआ। रामानन्द ने रामानुज द्वारा प्रवर्तित विशिष्टाद्वैत को थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ अपनाया था। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में रामचन्द्र शुक्ल इसका उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि "जगत्प्रसिद्ध स्वामी शंकराचार्य जी ने जिस अद्वैतवाद का निरूपण किया था, वह भक्ति के सन्निवेश के उपयुक्त न था। यद्यपि उसमें ब्रह्म की व्यावहारिक सगुण सत्ता का भी स्वीकार था, पर भक्ति के सम्यक् प्रसार के लिए जैसे दृढ़ आधार की आवश्यकता थी, वैसा दृढ़ आधार स्वामी रामानुजाचार्य जी (संवत् 1073) ने खड़ा किया। उनके विशिष्टाद्वैतवाद के अनुसार चिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म के ही अंश जगत् के सारे प्राणी हैं जो उसी से उत्पन्न होते हैं और उसी में लीन होते हैं। अत: इन जीवों के लिए उद्धार का मार्ग यही है कि वे भक्ति द्वारा उस अंशी का सामीप्य लाभ करने का यत्न करें।"(हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, कालविभाग, पृ. 77)

रामानुज के श्री सम्प्रदाय में विष्णु या नारायण की उपासना की जाती थी। रामानन्द ने उपासना के लिए बैकुण्ठ में रहने वाले विष्णु के बजाय लोक में लीला करने वाले अवतार राम का रूप अपनाया। उनके सिद्धान्त के अनुसार सभी मनुष्य सर्वसुलभ सगुण भक्ति के अधिकारी हैं। भक्ति-मार्ग में देश, वर्ण, जाति का भेद विचारणीय नहीं है। समाज के लिए वर्ण और आश्रम की व्यवस्था मान्य है। विभिन्न वर्णों के लिए भिन्न भिन्न कर्मों की योजना की गई है। किन्तु उपासना के क्षेत्र में सबका समान अधिकार है। भक्ति में किसी तरह का लौकिक प्रतिबन्ध नहीं है। विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त का आभास तुलसी की रचनाओं में सहज ही हो जाता है। वे भक्ति को अन्न जल की तरह सबके लिए सुलभ मानते हैं –

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 6.421| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

निगम अगम, साहब सुगम, राम साँचिली चाह।
अंबु असन अवलोकियत, सुलभ सबहि जग माँह। (वही, पृ. 93)

रामचन्द्र शुक्ल ने रामचरित-मानस में विशिष्टाद्वैत का आभास दिए जाने का उल्लेख किया है।
इसी प्रस्तावना के भीतर तुलसी ने अपनी उपासना के अनुकूल विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त का आभास भी यह कहकर दिया है कि

सियाराममय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी

जगत को केवल राममय न कहकर उन्होंने 'सियाराममय' कहा है। सीता प्रकृति-स्वरूपा हैं, और राम ब्रह्म हैं; प्रकृति अचित् पक्ष है और ब्रह्म चित् पक्ष। अत: परमार्थिक सत्ता चिदचिद्विशिष्ट है, यह स्पष्ट झलकता है। चित् और अचित् वस्तुत: एक ही हैं, इसका निर्देश उन्होंने –

गिरा अर्थ, जल बीचि सम कहियत भिन्न, न भिन्न।
बंदौ सीताराम पद जिनहि परम प्रिय खिन्न।
कहकर किया है।

संदर्भ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रो. वासुदेव सिंह।
3. हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास, डॉ. रामचन्द्र तिवारी।
4. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास: डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. पंचवटी: मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी।
6. साकेत में काव्य: संस्कृति और दर्शन, डॉ. द्वारिका प्रसाद मिश्र।
7. साकेत: एक अध्ययन, डॉ. नगेंद्र।
8. साकेत: मैथिलीशरण गुप्त।
9. साकेत संत: डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र।
10. कैकेयी की रामभक्ति: शिववचन चौबे, 'सांकृत्यायन, हिन्दुस्तान पेपर प्रोडक्टस कलकत्ता'
11. वैदेही वनवास: अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

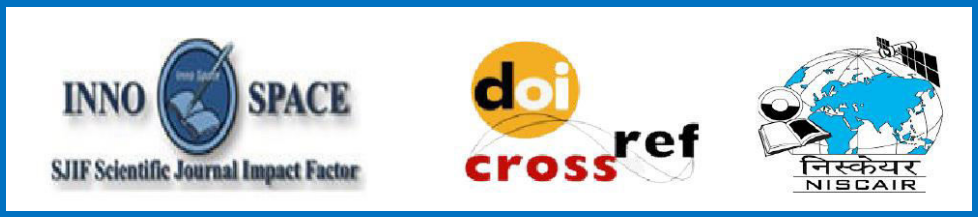

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

www.ijarety.in
editor.ijarety@gmail.com